



**चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय,
हिसार, लोक संपर्क कार्यालय**

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दीर्घी भूमि	18.8.22	५	२४

अब तक सरसों
की विकसित की है
21 उन्नत किस्में

दीर्घी भूमि ब्लॉग भवित्व

हक्कवि ने विकसित की सरसों की दो उन्नत किस्में, हरियाणा के साथ पंजाब, दिल्ली, राजस्थान और जम्मू के किसानों को मिलेगा लाभ



कुलपति ने वैज्ञानिकों की टीम को दी बधाई

उत्पादकता को बढ़ाने में कारगर

विश्वविद्यालय के कुरापटी प्रो. श्री. अर. कमलेज वे बताये कि आरएच 1424 तिक्स्म हल राजसों में सरसों पर बहुत और बहरी परिवर्धनों ने उन्हें के लिए जड़ी अरएच 1706 जड़ी पर भी न्यूच तरीके द्वारा दिखाये हैं। इन राजसों के लिए बैंडे में उसके पर बहुत के लिए बहुत उपयोग तिक्स्म पाई जाती है। उत्सोधन सरसों उन्हें वाले राजसों की उत्पादकता को बढ़ावे में लाते तथा पहचान दिलाते होते।

139 दिनों में पकानी फसल

जमुरेलन निवेशक द्वां जीत राज लर्ने वे बताया कि बहरी परिवर्धनों ने लक विकसित तिक्स्म आरएच 1424 में लोकप्रिय तिक्स्म आरएच 725 की तुल्या जै 14 % की घुस्ति के जरूर 25 दिनों पर तिक्स्म द्वारा जीत राज तक तक जाती है। यह तिक्स्म 139 दिनों में पक जाती है और इसके बादी में लोत तक ताजा 40.5 प्रतिशत होती है।

आरएच 725 सरसों उगाने वाले राजों में लोकप्रिय

विश्वविद्यालय के एवं नहरियाण के अधिकारी एवं आज्ञायिकों व पैद्य प्रजनन विभाग के अधिकारी

द्वां एस्टेट पाइपल ने बताया

कि हरियाणा कुप्रिय विश्वविद्यालय द्वारा

में सरसों अनुसंधान ने अजूनी रेट है

और अब तक यह अचूत उत्तम

हानत वाली उन्होंने की कुल 21

किस्मों को विकसित किया जाता है।

हाना ही ने यह विकसित सरसों को

तिक्स्म आरएच 725 की सरसों

उगाने वाले राजों के लिए उन्हें

बहुत लोकप्रिय है।

तिलहन वैज्ञानिकों की
भेनत का परिणाम

उन्होंने की इन तिक्स्मों
की विकास वैज्ञानिकों
की टीम द्वारा विकसित
किया जाता है। इन टीम
में है राज अरतर,

आरके श्वेतांग, श्रीरज

कुमार, अशोक कुमार, सुलभ चंद्र,

गोपाल पुष्पिय, लिला कुमारी, विशेष

नायक, दीपेंप कुमार, श्वेता कौरी

पट्टा, बद्रीन और राजेश रेडी

शामिल हैं। कुमारी वे वैज्ञानिकों

की इन टीम को बधाई दी।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
अमृत उज्ज्वला	१४.४.२२	२	६३

एचएयू ने सरसों की आरएच 1424 आरएच 1706 किस्में कीं विकसित

सरसों की दो उन्नत किस्मों में 38 से 40 प्रतिशत ज्यादा है तेल की मात्रा

हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय (एचएयू) के वैज्ञानिकों ने सरसों की दो नई उन्नत किस्में विकसित की हैं। कुलपीत ग्रो. बीआर कॉम्पोज ने बताया कि विश्वविद्यालय के तिलहन वैज्ञानिकों को टीम ने सरसों को आरएच 1424 और आरएच 1706 दो नई किस्में विकसित की हैं।

अर्थात् उपज और बेहतर तेल गुणवत्ता के कारण इन किस्मों को कृषि अनुसंधान संस्थान, दुर्गापुर (राजस्थान) में अखिल भारतीय अनुसंधान परियोजना (सरसों) की हुई बैठक में हरियाणा, पंजाब, दिल्ली, उत्तरी राजस्थान और जम्मू में खेती के लिए अनुमोदित किया गया है। उन्होंने बताया आरएच 1424 किस्म इन राज्यों में समय पर बुवाई और बारानी परिस्थितियों में खेती के



तिलहन वैज्ञानिकों की मेहनत का परिणाम : कलपति ने बताया कि सरसों की इन किस्मों को तिलहन वैज्ञानिकों की टीम ने विकसित किया है। टीम ने डॉ. रम अवतार, डॉरके स्थान, नीरज कुमार, मनजीत सिंह, विवेक कुमार, अशोक कुमार, सुभाष चंद्र, रमेश पुनिया, निशा कुमारी, विनोद गोपल, दलीप कुमार, रवि, कोर्ट घट्टम, यहानीर और राजबीर सिंह शामिल हैं।

तिलहन वैज्ञानिकों ने बताया कि आरएच 1424 एक मूल्य वर्धित किस्म है। यह सिंचित बेतों में समय पर बुलाई

के लिए उपयुक्त है। अनुसंधान निदेशक डॉ. जीत राम सर्मा ने बताया कि वर्षानी परीक्षणों में जवाहिकामित किस्म आरएच 1424 में लोकप्रिय किस्म आरएच 725 की तुलना में 14 प्रतिशत की बढ़ि के साथ 26 किलोटल प्रति हेक्टेयर की औसत बीज उपज दर्ज की गई है। यह किस्म 139 दिनों में पक जाती है और इसके बीजों में तेल की मात्रा 40.5 प्रतिशत होती है। दूसरी किस्म आरएच 1706 में 2.0 प्रतिशत से कम इरुसिक एसिड होने के साथ इसके तेल की गुणवत्ता में सुधार हुआ है, जिसका उपभोक्ताओं के स्वास्थ्य को लाभ होगा। यह किस्म पकने में 140 दिन का समय लेती है और इसकी औसत बीज उपज 27 किलोटल हेक्टेयर है। इसके बीजों में 38 प्रतिशत तेल की मात्रा होती है। द्यूरा



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम पंजाब मेसरी	दिनांक १४.८.२२	पृष्ठ संख्या ।	कॉलम ३-५
-----------------------------------	-------------------	-------------------	-------------



वैज्ञानिकों की टीम के साथ कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज।

हक्की ने विकसित की सरसों की 2 उन्नत किट्जे

हिसार, 17 अगस्त (ब्लूरे); चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों ने सरसों की 2 नई उन्नत किट्जे विकसित की हैं।

कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने कहा कि विश्वविद्यालय के तिलहन वैज्ञानिकों की टीम ने सरसों की आर.एच. 1424 व आर.एच. 1706 2 नई किट्जे विकसित की हैं। इनकी अधिक उपज और बेहतर तेल गुणवत्ता के कारण गरजस्थान कृषि अनुसंधान संस्थान, दुर्गापुर (गरजस्थान) में

अधिक भारतीय समान्वित अनुसंधान परियोजना (सरसों) की हुई बैठक में हरियाणा, पंजाब, दिल्ली, उत्तरी गरजस्थान और जम्मू राज्यों में खेती के लिए पहचान की गई है।

वैज्ञानिकों की टीम में डॉ. राम अवतार, आर.के. स्योराण, नीरज कुमार, मनजीत सिंह, विवेक कुमार, अशोक कुमार, सुभाष चंद्र, राकेश पूर्णिया, निशा कुमारी, विनोद गोयल, दलीप कुमार, श्वेता, कौर्ति पट्टम, महावीर और राजबीर सिंह शामिल हैं।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक भास्कर	१४.४.२५	५	१-५

अनुसंधान • हरियाणा, पंजाब, जम्मू और राजस्थान के किसानों को भी मिलेगा लाभ एचएयू ने विकसित की सरसों की 2 उन्नत किस्में, 14% तक अधिक मिलेगी फसल की पैदावार

भास्कर न्यूज़ | हिसार

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों ने सरसों की दो नई उन्नत किस्में विकसित की है। इन किस्मों का हरियाणा के साथ पंजाब, दिल्ली, उत्तरी राजस्थान और जम्मू आदि के किसानों को भी लाभ होगा।

विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. वी.आर. काम्बोज ने बताया कि विश्वविद्यालय के तिलहन वैज्ञानिकों की टीम ने सरसों की आरएच 1424 व आरएच 1706 दो नई किस्में विकसित की हैं। इन किस्मों की अधिक उपज और बेहतर तेल गुणवत्ता के कारण राजस्थान कृषि अनुसंधान संस्थान, दुर्गापुर (राजस्थान) में अखिल भारतीय समान्वित अनुसंधान परियोजना (सरसों) की हुई बैठक में हरियाणा, पंजाब, दिल्ली, उत्तरी राजस्थान और जम्मू आदि में खेती के लिए पहचान की गई है। उन्होंने बताया कि आरएच 1424 किस्म इन राज्यों में समय पर बुवाई आरएच 1706 जॉकि एक मूल्य वर्धित किस्म है, इन राज्यों के सिंचत क्षेत्रों में समय पर बुवाई के लिए बहुत उपयुक्त किस्म पाई गई है। उन्होंने कहा कि ये किस्में सरसों उगाने वाले राज्यों की उत्पादकता बढ़ाएंगी। कुलपति ने बताया कि हरियाणा पिछले कई वर्षों से सरसों फसल की उत्पादकता के मामले में देश में शीर्ष स्थान पर है।

सरसों की नई किस्म में 40.5 प्रतिशत होगी तेल की मात्रा



हिसार | एचएयू कुलपति प्रो. वी.आर. काम्बोज वैज्ञानिकों की टीम के साथ।

विवि में अब तक
विकसित की गई सरसों
की 21 उन्नत किस्में

विश्वविद्यालय के कृषि महाविद्यालय के अधिकारी एवं आनुवंशिकी व पौध प्रजनन विभाग के अध्यक्ष डॉ. एस.के. पाहुजा ने बताया कि हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय देश में सरसों अनुसंधान में अग्रणी केंद्र है और अब तक यहां 35छटी उपज क्षमता वाली सरसों की कुल 21 किस्मों को विकसित किया गया है। यहां ही में यहां विकसित सरसों की किस्म आरएच 725 कई सरसों उगाने वाले राज्यों के किसानों के बीच बहुत लोकप्रिय है।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

सम्पादकार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
ट्रैनिंग जागरूकता	१४.८.२२	२	१-५

एचएचयू के विज्ञानियों ने विकसित की सरसों की दो उन्नत किस्में

जगत्कार संवाददाता हिसार चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के विज्ञानियों ने सरसों की दो नई उन्नत किस्में विकसित की हैं। इन किस्मों का हरियाणा के साथ पंजाब, दिल्ली, उत्तरी राजस्थान और जम्मू राज्यों के किसानों को भी लाभ होगा। तिलहन विज्ञानियों की टीम ने सरसों की आरएच 1424 व आरएच 1706 दो नई किस्में विकसित की हैं। इन किस्मों की अधिक उपज और बेहतर तेल गुणवत्ता के कारण राजस्थान कृषि अनुसंधान संस्थान, दुर्गापुर (राजस्थान) में अधिक भारतीय समान्वित अनुसंधान परियोजना (सरसों) की हुई बैठक में हरियाणा, पंजाब, दिल्ली, उत्तरी राजस्थान और जम्मू राज्यों में खेती के लिए पहचान की गई है। आरएच 1424 किस्म इन राज्यों में समय पर



कुलपति प्रौ. वीआर काम्बोज विज्ञानियों की टीम के साथ। — पीआरओ

बुवाई और बारानी परिस्थितियों में दर्ज की गई है। यह किस्म 139 दिनों खेती के लिए जबकि आरएच 1706 में पक जाती है और इसके बीजों में तेल की मात्रा 40.5 प्रतिशत होती है।

यह है सरसों की किस्मों की विशेषताएँ : अनुसंधान निदेशक डा. जीत राम शर्मा ने बताया कि बारानी परीक्षणों में नव विकसित किस्म आरएच 1424 में लोकप्रिय किस्म आरएच 725 की तुलना में 14 प्रतिशत की वृद्धि के साथ 26 विवरण विवरण की प्रति हेक्टेएर की औसत बीज उपज 27 विवरण हेक्टेएर है।

सरसों की अब तक 21 उन्नत किस्में

कृषि महाविद्यालय के अधिकारी एवं अनुबंधिती व एवं प्रजनन विभाग के अध्यक्ष डा. एसके पाठुला ने बताया कि कृषि विश्वविद्यालय देश में सरसों अनुसंधान में आगामी केवल है और अब तक बड़ा अच्छी उपज क्षमता वाली सरसों की कुल 21 किस्मों का विकसित किया गया है। विकसित सरसों की किस्म आरएच 725 कई सरसों उपग्रहण के लिए किसानों के लिए बहुत लोकप्रिय है।

तिलहन विज्ञानियों की मेहनत का है परिणाम

सरसों की इन किस्मों को तिलहन विज्ञानियों की टीम द्वारा विकसित किया गया है। इस टीम में डा. राम अब्दुल, आरके श्योराण, नीरज कुमार, मनजीत सिंह, विवेक कुमार, अशोक कुमार, सुभाष घंटा, राकेश पुनिया, निशा कुमारी, विनोद गोयल, दलीप कुमार, श्वेता, कीति पट्टम, महावीर और राजदीप सिंह शामिल हैं।

सरसों की ये किस्में सरसों उपग्रहण के लिए राज्यों की उत्पादकता को बढ़ाने में भील का पथर सहित होती है। हरियाणा कई राज्यों से सरसों के सल की उत्पादकता के मामले में देश में शीर्ष स्थान पर है। विश्वविद्यालय में सरसों की अधिक उपज देने वाली किस्मों के विकास और किसानों द्वारा उन्नत तकनीकों का अपनाने के कारण सभी राज्यों हैं। — प्रौ. वीआर काम्बोज, कृषि विवरण हिसार



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम
अजीत समाचार

दिनांक
१५.४.२२

पृष्ठ संख्या
३

कॉलम
३-६

हक्कि ने विकसित की सरसों की दो उन्नत किस्में

हिसार, 17 अगस्त (विरेंद्र बर्मा) : चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों ने सरसों की दो नई उन्नत किस्में विकसित की हैं। इन किस्मों का हरियाणा के साथ पंजाब, दिल्ली, उत्तरी राजस्थान और जम्मू राज्यों के किसानों को भी लाभ होगा।

विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. डी.आर. काम्बोज ने यह जानकारी देते हुए बताया कि विश्वविद्यालय के तिलहन वैज्ञानिकों की टीम ने सरसों की आरएच 1424 व आरएच 1706 दो नई किस्में विकसित की हैं। इन किस्मों की अधिक उपज और बेहतर तेल गुणवत्ता के कारण राजस्थान कृषि अनुसंधान संस्थान, दुर्गापुर (राजस्थान) में अखिल भारतीय समान्वित अनुसंधान परियोजना (सरसों) की हुई बैठक में हरियाणा, पंजाब, दिल्ली, उत्तरी राजस्थान और जम्मू राज्यों में खेती के लिए पहचान की गई है। उन्होंने बताया आरएच 1424 किस्म इन राज्यों में समय पर

बुवाई और बारानी परिस्थितियों में खेती के लिए जबकि आरएच 1706 जोकि एक मूल्य वर्धित किस्म है, इन राज्यों के सिविल सेंट्रों में समय पर बुवाई के लिए बहुत उपयुक्त किस्म पाई गई है। उन्होंने कहा थे कि किस्में उपरोक्त सरसों ऊने बाले सभ्यों की उपादकता को बढ़ाने में मौल का पथर साधित होंगी।

कुलपति ने बताया कि हरियाणा पिछले कई वर्षों से सरसों फसल की उपादकता के मामले में देश में शीर्ष स्थान पर है। यह इस विश्वविद्यालय में सरसों की अधिक उपज देने वाली किस्मों के विकास और किसानों द्वारा उन्नत तकनीकों को अपनाने के कारण संभव हुआ है।

यह है सरसों की किस्मों की विशेषताएं।

अनुसंधान निदेशक डॉ. जीत राम गर्मा ने बताया कि बारानी परीक्षणों में नव विकसित किस्म आरएच 1424 में

लोकप्रिय किस्म आरएच 725 की तुलना में 14 प्रतिशत की वृद्धि के साथ 26 किंटल प्रति हेक्टेएर की औसत बीज उपज दर्ज की गई है। यह किस्म 139 दिनों में एक जाती है और इसके बीजों में तेल की मात्रा 40.5 प्रतिशत होती है। सरसों की दूसरी किस्म आरएच 1706 में 2.0 प्रतिशत से कम इरुसिक एसिड होने के साथ इसके तेल की गुणवत्ता में सुधार हुआ है, जिसका उपभोक्ताओं के स्वास्थ्य को लाभ होगा।

यह किस्म पकने में 140 दिन का समय लेती है और इसकी औसत बीज उपज 27 किंटल हेक्टेएर है। इसके बीजों में 38 प्रतिशत तेल की मात्रा होती है।

अब तक सरसों की विकसित की है 21 उन्नत किस्में।

विश्वविद्यालय के कृषि महाविद्यालय के अधिकारी एवं आनुविशिकी व पौध प्रजनन विभाग के अध्यक्ष डॉ. एस.के. पाठुजा ने बताया कार्य जारी रखने को कहा।

कि हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय देश में सरसों अनुसंधान में अग्रणी केंद्र है और अब तक वहाँ अच्छी उपज क्षमता बाली सरसों की कुल 21 किस्मों को विकसित किया गया है। हाल ही में यहाँ विकसित सरसों की किस्म आरएच 725 कई सरसों ऊने बाले राज्यों के किसानों के बीच बहुत लोकप्रिय है।

तिलहन वैज्ञानिकों की मेहनत का है परिणाम

सरसों की इन किस्मों को तिलहन वैज्ञानिकों की टीम द्वारा विकसित किया गया है। इस टीम में डॉ. राम अवतार, आर.के. श्योराज, नीरज कुमार, मनजीत सिंह, विकेक कुमार, अशोक कुमार, सुभाष चंद्र, राकेश पुनिया, निश कुमारी, विनोद गोपल, दलीप कुमार, खेता, कीर्ति पट्टम, महलोर और राजबीर सिंह शामिल हैं। कुलपति ने वैज्ञानिकों की इस टीम को बधाई दी और उन्हे भविष्य में भी सरसों की अन्य किस्मों के विकास का कार्य जारी रखने को कहा।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

सम्पादक पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
श्रीनारदि त्रिभुवन	१८.३.२२	५	२-३

हकूमि ने विकसित की सरसों की दो फसलें

हिसार, 17 अगस्त (बिल)

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों ने सरसों की दो नई उन्नत किस्में विकसित की हैं। इससे हरियाणा के साथ-साथ पंजाब, दिल्ली, उत्तरी राजस्थान और जम्मू गण्डों के किसानों को भी लाभ होगा। कुलपति प्रो. बीआर कम्बोज ने बताया कि तिलहन वैज्ञानिकों की टीम ने सरसों की आरएच 1424 व आरएच 1706 दो नई किस्में विकसित की हैं। इन किस्मों की अधिक उपज और बेहतर तेल गुणवत्ता के कारण राजस्थान कृषि अनुसंधान संस्थान दुगांपुर में अखिल भारतीय समानित अनुसंधान परियोजना (समसों) की हुई बैठक में हरियाणा, पंजाब, दिल्ली, उत्तरी राजस्थान और जम्मू गण्डों में खेती के लिए पहचान की गई है।

ये हैं विशेषताएं

अनुसंधान विदेशक डॉ. जीत राज शर्मा ने बताया कि बाराबी परीक्षणों ने नव विकसित किस्म आरएच 1424 में लोकप्रिय किस्म आरएच 725 की तुलना में 14 प्रतिशत की वृद्धि के साथ 26 विवरण प्रति हेक्टेयर की औसत बीज उपज दर्ज की गई है। यह किस्म 139 दिनों में पक जाती है और इसके बीजों में तेल की मात्रा 40.5 प्रतिशत होती है। सरसों की दूसरी किस्म आरएच 1706 में 2.0 प्रतिशत से कम इसकिक परिण ठोंडे के साथ इसके तेल की गुणवत्ता में सुधार हुआ है, जिसका उपयोक्ताओं के स्वास्थ्य को लाभ होगा। यह किस्म पकने में 140 दिन का समय लेती है और इसकी औसत बीज उपज 27 विवरण हेक्टेयर है।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार

पत्र का नाम

निपराग २०२२

दिनांक

17.8.2022

पृष्ठ संख्या

--

कॉलम

--

**हकूमि ने विकसित की सरसों की दो आरएच 1424 व आरएच 1706 उन्नत किस्म
140 दिन में पककर तैयार होने वाली इन किस्मों में तेल की
मात्रा अच्छी, स्वास्थ्य के लिए भी है लाभदायक : प्रो. काम्बोज**

**कुलपति ने कहा : हरियाणा
के साथ अब राज्यों के
किसानों को भी भिलेगा लाभ**

विद्याग टाइम्स न्यूज़
हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों ने सरसों की दो नई उन्नत किस्में विकसित की हैं। इन किस्मों का हरियाणा के साथ पंजाब, दिल्ली, उत्तरी राजस्थान और जम्मू राज्यों के किसानों को भी लाभ होगा।

विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. डॉ. आर. काम्बोज ने यह जानकारी देते हुए बताया कि विश्वविद्यालय के तिलहन वैज्ञानिकों की दोमं ने सरसों को आरएच 1424 व आरएच 1706 दो नई किस्में विकसित की हैं। इन किस्मों की अधिक उपयोग और बेहतर तेल गुणवत्ता के कारण राजस्थान कृषि अनुसंधान संस्थान, दुर्गापुर (राजस्थान) में अखिल भारतीय समाजिक अनुसंधान परियोजना (सरयों) की हुई बैठक में हरियाणा, पंजाब, दिल्ली, उत्तरी राजस्थान और जम्मू राज्यों में खेतों के लिए पहचान की गई है। उन्होंने बताया आरएच 1424 किस्म इन राज्यों में समय पर बुराई और आगमी परिवर्तनों में खेतों के लिए जबर्दस्त आरएच 1706 जोकि एक मूल्य वर्धित किस्म है, इन राज्यों के सिविल खेतों में समय पर बुराई के लिए बहुत उपयुक्त किस्म पाई गई है। उन्होंने कहा कि इसमें संभव हुआ है।



**तिलहन वैज्ञानिकों की मेहनत का है
परिणाम**

सरसों की इन किस्मों को तिलहन वैज्ञानिकों द्वारा टीम द्वारा विकसित किया गया है। इस टीम में डॉ. जी. राम अवलोक, आर. के. प्रेमराज, नीरज कुमार, परमोत्तम सिंह, विवेक कुमार, अशोक कुमार, सुभाष चंद, राकेश पुरिया, निता कुमारी, विश्वेद गोपल, दलीप कुमार, देवा, कीर्ति पट्टप, यशोवीर और राजबोंग मिहं शामिल हैं। कुलपति ने वैज्ञानिकों की इस टीम को बधाई दी और उन्हें परिणाम में भी सरसों की उन्नत किस्मों के विकास का कार्य बारी से रखने को कहा।

उपरोक्त सरसों का नाम राज्यों की उत्पादकता को बढ़ाने में योग्य का प्रभाव साधित होगा।

कुलपति ने बताया कि हरियाणा पिछले कई वर्षों में यहाँ की फसल को उत्पादकता के मापदंड में देश में शोध रखा गया है। यह इस विश्वविद्यालय में सरसों की अधिक उपयोग देने वाली किस्मों के विकास और किसानों द्वारा उन्नत तकनीकों को अपनाने के कारण

**अब तक सरसों की विकसित
की हैं 21 उन्नत किस्में**

विश्वविद्यालय के कृषि महाविद्यालय के अधिकारी एवं अनुबंधिकी व पौध प्रज्ञन विभाग के अध्यक्ष डॉ. प्रसाद के पाहुंचा ने बताया कि हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय देश में सरसों अनुसंधान में आगामी कोड है और अब तक यह अच्छी उपयोग क्षमता वाली सरसों की कूट 21 किस्मों का विकसित किया गया है। इस दी में यहाँ विकसित सरसों की किस्म आरएच 725 कर्ज सरसों उपरे यांते राज्यों के किसानों के बीच व्यापक प्रिय है।

**यह है सरसों की किस्मों
की विशेषताएं**

अनुसंधान विदेशक डॉ. जी. राम से कम इकायिक एवं उन्नत किस्म आरएच 1706 में 2.0 प्रतिशत अनुसंधान विदेशक डॉ. जी. राम ने बताया कि आगामी परीक्षणों में इसके तेल की गुणवत्ता में सुधार हुआ नव विकसित किस्म आरएच 1424 में है जिसका उत्पादकता के स्वास्थ्य लोकप्रिय किस्म आरएच 725 की की समान होगा। यह किस्म पकने में तुलना में 14 प्रतिशत की उम्मीद के साथ 26 किंवदं प्रति हेक्टेयर की इसकी असत बीच उन्नत 27 किंवदं की गई है। यह हेक्टेयर में पक करती है और तेल की मात्रा होती है।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम समर्पण	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
	17.8.2022	--	--

हकूमि ने विकसित की सरसों की दो उन्नत किस्में

मनसा हरियाणा ब्लूज

हिसारा चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों ने सरसों की दो नई उन्नत किस्में विकसित की हैं। इन किस्मों का हरियाणा के साथ पंजाब, दिल्ली, उत्तरी राजस्थान और जम्मू राज्यों के किसानों को भी लाभ होगा।

विश्वविद्यालय के कल्पित प्रो. डॉ. आर. कांवाज ने यह जानकारी देते हुए बताया कि विश्वविद्यालय के तिलहन वैज्ञानिकों द्वारा टीम ने सरसों की आरएच 1424 व आरएच 1706 दो नई किस्में विकसित की हैं। इन किस्मों को अधिक उपज और बेहतर तेल गुणवत्ता के कारण राजस्थान कृषि अनुसंधान संचालन, दुर्गापुर (राजस्थान) में अखिल भारतीय समाचार अनुसंधान परियोजना (सरसों) की हुई बैठक में हरियाणा, पंजाब, दिल्ली, उत्तरी राजस्थान और जम्मू राज्यों में खेती के लिए पहचान की गई है। उन्होंने बताया आरएच 1424 किस्म इन राज्यों में समय पर बढ़ाई और बाहरी परिस्थितियों में खेती के लिए जबकि आरएच 1706 जोकि एक मूल्य वर्धित किस्म है, इन राज्यों के स्थिति क्षेत्र में समय पर बढ़ाई के लिए बहुत उपयुक्त किस्म पाई गई है। उन्होंने कहा ये किस्में उपरक्त मरसों उगाने वाले राज्यों की उत्पादकता को बढ़ाने में मौल का पथर साधित होंगी।

कल्पित ने बताया कि हरियाणा विछले कई वर्षों



में सरसों कफलत की उत्पादकता के मापदंड में देश में शीर्ष स्थान पर है। यह इस विश्वविद्यालय में सरसों की विकास और विभिन्न किस्मों के विकास और विकास के लिए वाली किसानों के अनुमान के बारांग 1706 में 2.0 प्रतिशत से कम इसकिए परिषट होने के साथ इसके तेल की गुणवत्ता में सुधार हुआ है।

यह है सरसों की किस्मों की विशेषताएं। अनुसंधान निदेशक डॉ. जीत राम शर्मा ने बताया कि वारानी परीक्षणों में नव विकसित किस्म आरएच 1424 में लोकप्रिय किस्म आरएच 725 को तुलना में 14 प्रतिशत की वृद्धि के साथ 26 किलोल प्रति

हेक्टेयर की औसत बीज उपज दर्ज की गई है। यह किस्म 139 दिनों में पक जाती है और इसके बीजों में तेल की मात्रा 40.5 प्रतिशत होती है। सरसों की दूसरी किस्म आरएच 1706 में 2.0 प्रतिशत से कम इसकिए परिषट होने के साथ इसके तेल की गुणवत्ता में सुधार हुआ है जिसका उभयोक्ताओं के स्वास्थ्य को लाभ होगा। यह किस्म फसले में 140 दिन का समय लेती है और इसकी औसत बीज उपज 27 किलोल हेक्टेयर है। इसके बीजों में 38 प्रतिशत तेल की मात्रा होती है।

अब तक सरसों की विकसित की है 21 उन्नत किस्में।

विश्वविद्यालय के कृषि महाविद्यालय के अधिकारी एवं अनुबंधिकारी व पीढ़ प्रबन्ध विभाग के अध्यक्ष डॉ. एस.के. पाहुजा ने बताया कि हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय देश में सरसों अनुसंधान में आगांग केंद्र है और अब तक यहां अच्छी उपज क्षमता वाली सरसों की कुल 21 किस्मों को विकसित किया गया है। हाल ही में यहां विकसित सरसों की किस्म आरएच 725 कई सरसों उगाने वाले राज्यों के किसानों के बीच बहुत लोकप्रिय है।

तिलहन वैज्ञानिकों की मेहनत

का है परिणाम। सरसों की इन किस्मों को तिलहन वैज्ञानिकों की टीम द्वारा विकसित किया गया है। इस टीम में डॉ. राम अब्दला, आर.के. रमेश, नीरज कुमार, मनजीत सिंह, विवेक कमार, अश्वक कुमार, सुभाष चंद्र, राकेश पुनिया, निशा कुमारी, विनाद गोपल, दलीप कुमार, शता, कीर्ति पट्टम, महलीर और गजबीर सिंह शामिल हैं। कल्पित ने वैज्ञानिकों की इस टीम को बधाई दी और उन्हें भविष्य में भी सरसों की उन्नी किस्मों के विकास का कार्य जारी रखने को कहा।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
नम्बर २५२	17.8.2022	--	--

सरसों की दो उन्नत किस्में आरएच 1424 व 1706 विकसित की हक्किवि वैज्ञानिकों ने

हिसार/ 17 अगस्त/ रिपोर्टर

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों ने सरसों की दो नई उन्नत किस्में विकसित की हैं। इन किस्मों का हरियाणा के साथ पंजाब, दिल्ली, उत्तरी राजस्थान और जम्मू राज्यों के किसानों को भी लाभ होगा। कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज ने बताया कि विश्वविद्यालय के तिलहन वैज्ञानिकों की टीम ने सरसों की आरएच 1424 व आरएच 1706, दो नई किस्में विकसित की हैं। इस टीम में डॉ. राम अवतार, आरके श्योराण, नीरज कुमार, मनजीत सिंह, विवेक कुमार, अशोक कुमार, सुधाय चंद्र, राकेश पुनिया, निशा कुमारी, विनोद गोदल, दलीप कुमार, श्वेता, कौतिं पट्टम, महावीर और राजबीर सिंह शामिल हैं। इन किस्मों की अधिक उपज और बेहतर तेल गुणवत्ता के कारण राजस्थान कृषि अनुसंधान



संस्थान, दुर्गापुर (राजस्थान) में अखिल भारतीय समान्वित अनुसंधान परियोजना (सरसों) की हड्डी बैठक में हरियाणा, पंजाब, दिल्ली, उत्तरी राजस्थान और जम्मू राज्यों में खेती के लिए पहचान की गई है। उन्होंने बताया कि आरएच 1424 किस्म इन राज्यों में समय पर बुबाई और बारानी परिस्थितियों में खेती के लिए जबकि आरएच 1706 जोकि एक भूल्य वर्धित किस्म है, इन राज्यों के सिंचित क्षेत्रों में समय पर बुबाई के लिए बहुत उपयुक्त किस्म पाई गई है। उन्होंने कहा ये किस्में उपरोक्त सरसों उगाने वाले राज्यों की उत्पादकता को बढ़ाने में मोल

का पथर साबित होंगी। कुलपति ने बताया कि हरियाणा पिछले कई वर्षों से सरसों फारसल की उत्पादकता के मामले में देश में शीर्ष स्थान पर है। अनुसंधान निदेशक डॉ. जीत राम शर्मा ने बताया कि बारानी परीक्षणों में नव विकसित किस्म आरएच 1424 में लोकप्रिय किस्म आरएच 725 की तुलना में 14 प्रतिशत की वृद्धि के साथ 26 किलोटन प्रति हेक्टेयर की औसत बीज उपज दर्ज की गई है। यह किस्म 139 दिनों में पक जाती है और इसके बीजों में तेल की मात्रा 40.5 प्रतिशत होती है। सरसों की दूसरी किस्म आरएच 1706 में 2 प्रतिशत से

कम इरुसिक एसिड होने के साथ इसके तेल की गुणवत्ता में सुधार हुआ है जिसका उपभोक्ताओं के स्वास्थ्य को लाभ होगा। यह किस्म पकने में 140 दिन का समय लेती है और इसकी औसत बीज उपज 27 किलोटन प्रति हेक्टेयर है। इसके बीजों में 38 प्रतिशत तेल की मात्रा होती है। विश्वविद्यालय के कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता एवं आनुवंशिकी व पौध प्रजनन विभाग के अध्यक्ष डॉ. एसके पाहुजा ने बताया कि अब तक यहां अच्छी उपज क्षमता वाली सरसों की कुल 21 किस्मों को विकसित किया गया है।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

सम्बार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
सम्बार पत्र	17.8.2022	--	--

एचएयू ने विकसित की सरसों की दो उन्नत किस्में

हरियाणा के साथ अन्य राज्यों के किसानों को भी मिलेगा लाभ

किसी पत्र नहु, हिस्सत: पीछे
पत्र सिंह हरियाणा कृषि
विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों ने सरसों
की दो नई उन्नत किस्में विकसित की
हैं। इन किस्मों का इराजात के साथ
पश्च, धिनी, उत्तरी ग्रन्जरान और
उत्तरी ग्रन्जरान के किसानों को भी सुन्दर
होगा।

कुलपति प्रौ. वी. अर. कम्होज ने
सरसों की विकसित किस्मों के विवरन्
वैज्ञानिकों की टीम ने सरसों की
उत्तरी 1424 व अन्यथा 1706
की नई किस्में विकसित की हैं। इन
किस्मों की अधिक उत्तरी ओर बहुत-
तरी सुलभता के साथ ग्रन्जरान
कृषि अनुसंधान संस्थान, हुगोपुर



इन्हीं प्रौ. वी. अर. कम्होज वैज्ञानिकों की टीम के सदा

(एवं स्वाक्षर) में अधिकत चारों विकसित किस्मों की टीम पहलान सरसों की दो नई किस्मों को विवरन्
सम्पादित अनुसंधान परियोजना की गई है।

वैज्ञानिकों की टीम हाथ विकसित
(सरसों) को दुब वैज्ञानिक विकास ग्रन्जरान की
पश्च, धिनी, उत्तरी ग्रन्जरान और
मेहनत का है परिणाम

यह है सरसों की किस्मों की विवेचताएं

अनुसंधान विवेचन द्वा. लौट रम अमा ने कहा कि कानूनी कीसियों में नव
विकसित किस्म अन्यथा 1424 में लौकीन विकास आन्यथा 725 की
उत्तरी में 14 विकास की वृद्धि के साथ 26 विकास प्रौ. वैज्ञानिकों की
वैज्ञानिक उत्तरी दो ग्रन्जरान हैं। यह किस्म 139 दिनों में पक जाती है
और इसकी बीजों में केत जो याजा 40.5 प्रतिशत होती है। सरसों की दुबी
विकास अन्यथा 1706 में 2.0 प्रतिशत से कम इवीजाक लौकीन के
साथ इसके जैसे की ग्रन्जरान में सुधार हुआ है विवरन् अपेक्षाओं के
समान जो लाभ होता। यह किस्म पकने में 140 दिन का समय लेती है
और इसकी अवैज्ञानिक उत्तरी 27 विकास होती है। इसके बीजों में 35
प्रतिशत जैसे याजा होती है।

कुलपति, वैज्ञानिक विवेचन, विवेचन कृषि, अधिकृत कृषि, खेत, खेती युवा,
अनुसंधान कृषि, ग्रन्जरान चाह, उत्तरी ग्रन्जरान और उत्तरी विकास कीपाल हैं।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

माचार पत्र का नाम बढ़ते कदम (दिल्ली)	दिनांक 18.8.2022	पृष्ठ संख्या --	कॉलम --
---	---------------------	--------------------	------------

एचएयू ने विकसित की सरसों दो नई किस्म, बीजों में तेल की जात्रा 38 से 40 प्रतिशत, उपज भी अधिक



सरसों की नई किस्म को रितिज करते कुतपति प्रौ. गीतार छांडोज व अन्य सदस्य।

■ संवाददाता: किसार (हरियाणा)

हरियाणा के लियाएँ मौजूदी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय (एचएयू) के वैज्ञानिकों ने सरसों की दो नई उन्नत विस्तरे विकसित की हैं। कुलगांठ प्रौ. चौधरी कांबोज ने बताया कि विश्वविद्यालय के लिलहन वैज्ञानिकों की टीम ने सरसों की आरएच 1424 व आरएच 1706 में नई विस्तरे विकसित की है।

अधिक उपज और बेतवार तेल गुणवत्ता के कारण इन किस्मों को कृषि अनुसंधान मंस्थान, दुग्धपुर (राजस्थान) में अधिकृत भारतीय अनुसंधान परियोजना (सरसों) की हड्डी बैठक में हरियाणा, पंजाब, दिल्ली, उत्तरा राजस्थान और जामू के खेतों के लिए अनुमोदित किया

गया है।

उदाहरण बताया आरएच 1424 किस्म इन राज्यों में समय पर बुनाई और बारानी परिस्थितियों में खेतों के लिए जबकि आरएच 1706 जोकि एक मूल्य वर्धित किस्म है, इन राज्यों के मिस्रित बीजों में समय पर बुनाई के लिए, बहुत लम्बाकाल किस्म पाइ गई है।

अनुसंधान निदेशक डॉ. जीत राधा शर्मा ने बताया कि बारानी परीक्षणों में नव विकसित किस्म आरएच 1424 में लौकिक विस्तर किस्म आरएच 725 की कुपाना में 14 प्रतिशत की बढ़िया के बाय 26 किवटल प्रति हड्डीयर को औसत बीज उपज दर्ज की गई है। यह किस्म 139 दिनों में पक जाती है और इसके बीजों में तेल की जात्रा 38 से 40 प्रतिशत होती

है।

सरसों की दूसरी किस्म आरएच 1706 में 2.0 प्रतिशत से कम इकाईक एसाई होने के साथ इसके तेल की गुणवत्ता में सुधार हुआ है, जिसका उपचोत्तरों के स्वास्थ्य को लाभ होगा। यह किस्म पकने में 140 दिन का समय लेती है और इसकी औसत बीज उपज 27 किवटल हड्डीयर है। इसके बीजों में 38 प्रतिशत तेल की जात्रा होती है।

अब तक सरसों की 21 किस्में

विश्वविद्यालय के कृषि प्रशासनिक विभाग द्वारा विकसित विभिन्न किस्मों की विवरणों का विवरण दिया गया है।

विश्वविद्यालय में सरसों की 21 किस्मों को विकसित किया चुका है। सरसों की किस्म आरएच 725 कई सरसों उत्पादन वाले राज्यों के किस्मों के बीच बहुत लोकप्रिय है।

तिलहन वैज्ञानिकों की मेहनत का परिणाम

कुतपति ने बताया कि सरसों को इन किस्मों को विलहन वैज्ञानिकों की टीम द्वारा विकसित किया गया है। इस टीम में डॉ. राधा अव्वलार, आरके इयोग्यन, नीरज कुमार, मनजीत मिंह, विवेक कुमार, अशोक कुमार, सुभाष चंद्र, रमेश पुनिया, निशा कुमारी, विनोद गोपाल, दलीप कुमार, सपेता, कौलि पट्टम, महावीर और राजवीर सिंह शामिल हैं।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
'अजीट' १३।८।२२	१४.८.२२	१२	४

बीएससी एग्रीकल्चर ५ व ६ वर्षीय पाठ्यक्रमों की प्रवेश परीक्षा के परिणाम घोषित

हिसार, १७ अगस्त (विरोद्ध
वर्ष) : चौधरी चरण सिंह हरियाणा
कृषि विश्वविद्यालय के बीएससी
एग्रीकल्चर चार वर्षीय पाठ्यक्रम
और बीएससी एग्रीकल्चर छ. वर्षीय
पाठ्यक्रमों के परिणाम बुधवार को
घोषित कर दिए गए हैं।

यह जानकारी देते हुए
विश्वविद्यालय के कुलसचिव डॉ.
एस.के. महता ने बताया कि
बीएससी एग्रीकल्चर चार वर्षीय
पाठ्यक्रम में असिता, तमना और
शुभ्र ने प्रथम, द्वितीय व तृतीय
स्थान हासिल किया। इसी प्रकार
बीएससी एग्रीकल्चर छ. वर्षीय
पाठ्यक्रम में परवीन, रुद्र प्रताप और
बेदांत ने प्रथम, द्वितीय व तृतीय
स्थान हासिल किया है। उन्हेंने कहा
उम्मीदवार बपरोक्त परीक्षाओं के
परिणाम व इससे संबंधित नवीनतम
जानकारियों के लिए विश्वविद्यालय
को ऑफिसाइट पर चेक कर सकते हैं।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
अभ्यु उजाता	१४.४.२२	५	६

एचएयू : बीएससी एग्रीकल्चर प्रवेश परीक्षा में अक्षिता-परबीन प्रथम

हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय (एचएयू) के बीएससी एग्रीकल्चर चार वर्षीय पाठ्यक्रम और बीएससी एग्रीकल्चर छह वर्षीय पाठ्यक्रमों के परिणाम बुधवार को घोषित कर दिया है।

विश्वविद्यालय के कुलसचिव डॉ. एमके महता ने बताया कि बीएससी एग्रीकल्चर चार वर्षीय पाठ्यक्रम में अक्षिता प्रथम, तमना द्वितीय और सुप्रगति तृतीय रही। इसी प्रकार बीएससी एग्रीकल्चर छह वर्षीय पाठ्यक्रम में परबीन प्रथम, रुद्र प्रताप द्वितीय और वेदांत तृतीय रही। उन्होंने कहा उम्मीदवार उपरोक्त परीक्षाओं के परिणाम व इससे संबंधित नवीनतम ज्ञानकारियों के लिए विश्वविद्यालय की वेबसाइट पर चेक कर सकते हैं। आगे



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

सम्पादक पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
बीएससी भास्कर	१८.८.२२	२	५-६

बीएससी प्रवेश परीक्षा के परिणाम में अद्वितीय और परवीन अत्यवल

हिसार | चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के बीएससी एडीकल्चर चार वर्षीय पाठ्यक्रम और बीएससी एडीकल्चर छः वर्षीय पाठ्यक्रमों के प्रवेश परीक्षा परिणाम घोषित कर दिए गए हैं।

विश्वविद्यालय के कुलसचिव डॉ. एस.के. महता ने बताया कि बीएससी एडीकल्चर चार वर्षीय पाठ्यक्रम में हिसार के जवाहर नगर की अद्वितीय, रेवाड़ी जिले की तमन्ना और चरखी

दादरी के फतेहगढ़ गांव के शुभम ने क्रमशः प्रथम, द्वितीय व तृतीय स्थान हासिल किया। इसी प्रकार बीएससी एडीकल्चर छः वर्षीय पाठ्यक्रम में परवीन, रुद्र प्रताप और वेदांत ने प्रथम, द्वितीय व तृतीय स्थान हासिल किया है। उम्मीदवार उपरोक्त परीक्षाओं के परिणाम व इससे संबंधित नवीनतम जानकारियों के लिए विश्वविद्यालय की वेबसाइट चेक कर सकते हैं।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

सम्बन्धान पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
२१ अगस्त २०२०	१४.८.२२	२	२५

बीएससी एग्रीकल्चर में हिसार की अक्षिता और परवीन ने किया टाप

जास, हिसार: चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के बीएससी एग्रीकल्चर चार वर्षीय पाठ्यक्रम और बीएससी एग्रीकल्चर छह वर्षीय पाठ्यक्रमों के परिणाम वृध्यावार को घोषित कर दिए गए हैं। कुलसचिव डा. एसके महता ने बताया कि हिसार के जबाहर नगर की अक्षिता ने ८५.५ प्रतिशत अंक पाकर प्रथम, रेवाड़ी के मनाथी तहसील निवासी लमना ने ८५.५ प्रतिशत अंक

के साथ द्वितीय स्थान तो चरखी दादरी के गांव फतेहगढ़ की गुभम ने ८४.५ के साथ तृतीय स्थान हासिल किया। बीएससी एग्रीकल्चर छह वर्षीय पाठ्यक्रम में खेड़ा निवासी परवीन ने ९७ प्रतिशत अंक पाकर प्रथम स्थान, सिरसा के रुद्र प्रताप ९५ प्रतिशत अंक पाकर द्वितीय और फतेहबाद की शीतल कालोंवाली निवासी बैदात ने ९४ प्रतिशत अंक पाकर तृतीय स्थान हासिल किया है।